**International Journal of Advanced Research and Development**
**ISSN: 2455-4030**
**Impact Factor: RJIF 5.24**
**www.advancedjournal.com**
**Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 711-713**

# श्रवण कुमार गोस्वामी के नाटकों का संक्षिप्त–परिचय

**डॉ नीलम**
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग, सरकारी महाविघालय पंचकुला, पंचकुला, हरियाणा, भारत ।

## प्रस्तावना

### समय

समय को बदल डालने की जो लोग ठेकेदार करते हैं, जब नवयुग उनके ही दरवाजे पर दस्तक देता है, तो उस दस्तक को सुनना भी उनके लिए दुष्कर हो जाता है । वे दस्तक को नकारने की भरपूर चेष्टा करते हैं । एक ओर समय के बदलते हुए तेवर से समझौता करना ऐसे लोगों की विवशता हो जाती है, तो दूसरी ओर उनका मिथ्या अहं और समय के घात–प्रतिघात के बीच से यह सत्य उभरता है कि 'समय' के समक्ष सबने घुटने टेके हैं ... और ठाकुर रतन प्रकाश सिंह को भी अपने घुटने टेकने पड़ते हैं, जो कभी मधुकर को एक गंदी झाड़ू मानते थे, पर अब वह उस कथित झाड़ू को अपनी पगड़ी में कलंगी का स्थान देने को तैयार हैं ... आखिर क्यों । इस प्रकार का उत्तर 'समय' के पृष्ठों में कैद है ।

प्रस्तुत नाटक "समय" में ठाकुर रत्नप्रकाश सिंह एक वर्ष के एक इलाके में सांसद है । नाटक का आरम्भ ही ठाकुर रत्न प्रकाश सिंह के एक भाषण से होता है । भाषण में वे जात–विरोधी, भंयकर गरीबी, अर्न्तजातीय विवाह पर अपने विचारों को प्रकट करते हैं । वे कहते हैं कि अगर वह स्वयं शादी–शुदा नहीं होते तो वे स्वयं अर्न्तजातीय विवाह कर लेते । वे भाषण में घोषणा भी करते हैं कि जो युवक या युवती अर्न्तजातीय विवाह करेंगे उन्हें चौबीस घण्टे के अन्दर पुरस्कार राशि व अड़तालीस घण्टे के अन्दर सरकारी नौकरी दी जायेगी । बस शर्त इतनी–सी है कि लड़का ऊँची जाति का है तो उसे किसी पिछड़ी जाति या अनुसूचित जाति की लड़की से ब्याह करना होगा । अगर उँची जाति की है तो उसे पिछड़ी जाति या अनुसूचित जाति के किसी लड़के से शादी करनी होगी । ठाकुर की एक बेटी है, जिसका नाम भानुजा है, वह मधुकर से प्रेम करती है और उसे अपना जीवन साथी बनाना चाहती है । इसलिए वह मधुकर से जिद करके अपने पिताजी से मिलने के लिए अपने घर में बुलाती है । मधुकर एक अनुसूचित जाति का लड़का है । वह जानता है कि भानुजा के पिता इस शादी के लिए कभी राजी नहीं होंगे । फिर भी मुधकर भानुजा के कहने पर ठाकुर जी से मिलने के लिए आता है, ठाकुर जब कधुकर से उसका नाम पूछते हैं तो मधुकर चौधरी नाम सुनकर ठिठक जाते हैं । वह मधुकर को एस. सी. कहकर उसका अपमान भी करते हैं । वे कहते हैं "असली चेहरा तो मैंने अब देखा है – तुम क्या हो – यह मैंने अब जान लिया है । पाखाने की गंदी झाड़ू होकर तुम ताज की कलगी बनना चाहते हो, चल जाओ यहां से । ठाकुर आगे बढ़कर मधुकर को धक्के मारकर घर से बाहर निकाल देते हैं और स्वयं बड़बड़ाने लगते हैं । भानुजा अपने पिता का विरोध करती है, वह मधुकर से विवाह करना चाहती है । जब ठाकुर उनके विवाह के लिए राजी नहीं होते तो दोनों कोर्ट में जाकर विवाह कर लेते हैं इसके बाद ठाकुर भानुजा को घर में कैद कर लेता है और मधुकर को अपने गुण्डों से खूब पिटवाता है, इसके साथ–साथ थाने में गलत रिपोर्ट भी लिखवा देता है कि मधुकर ने जबरदस्ती उसकी बेटी से विवाह किया है । वह अपनी बेटी भानुजा का सिंदूर खुद पोंछ देता है । भानुजा की माँ मीरा ठाकुर को समझाने का लाख प्रयत्न करती है किन्तु वह नहीं मानता । उधर मधुकर अपनी पत्नी भानुजा को पाने के लिए कानूनी लड़ाई लड़ता है, वह अंत में ठाकुर की धमकियों से लड़ता हुआ, मंत्री महोदय के लाख धमकाने पर, कोर्ट के फैसले के द्वारा भानुजा को प्राप्त कर लेता है । भानुजा मधुकर के धर आकर अपने पिता को याद करके खूब रोती है, इसी बीच तार वाला आकर तार मधुकर को देता है । मधुकर उस तार को पढ़कर खुशी से झूम उठता है, क्योंकि उसने आई.ए.एस. की परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया था, वह अब बड़ा अधिकारी बन जाता है । ठाकुर अपनी बेटी की याद में बहुत रोता है, उसे अपने किये गये बुरे कार्यों पर पछतावा होता हे । अंत में अपनी पत्नी मीरा के कहने पर वह भानुजा व मधुकर से मिलने के लिए जाते हैं और कहते हैं समय बड़ा बलवान है । यह आदमी को कहीं भी झुका सकता है । नाटक के अंत में ठाकुर रत्न प्रकाश सिंह मधुकर चौधरी को अपना दामाद स्वीकार कर लेता है, जाति–पाँति के बंधन को मिटा देता है । तभी ठाकुर भार्गव से कहता है" जब ऐसी बात है तो आज मैं अपना धर्म पूरी तरह भ्रष्ट कर लेता हूँ । इस प्रकार पूरा नाटक –समय' के बदलने की ओर संकेत करता है ।

## परिचय

### कल दिल्ली की बारे है

देश जनता का है । मगर, अब जनता यह सेचने लगी है कि इस देश पर उसका कोई अधिकार नहीं रह गया है । उसके पास केवल वोट देने का ही अधिकार है पर जनता जिसे अपना वोट देती है, वह पराजित घोषित कर दिया जाता है, जनता जिसे वोट नहीं देती वह सत्तासीन नजर आता है । परिणाम यह है कि आज जनतांत्रिक कहे जाने वाले सभी निकायों में ऐसे ही लोग भरने लगे हैं, जिन्होंने 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली कहावत की यथार्थ में बलद दिया है । इन तत्त्वों ने प्रजातंत्र को अपनी रखैल समझ लिया है ओर इनके हौसले बड़े बुलंद हो गये हैं । ये जहाँ तक पहुँचे हैं, उतने से ही संतुष्ट नहीं हैं । इनकी गिद्ध दृष्टि अब दिल्ली पर है और इनका नारा है –" कल दिल्ली की बारे है । "यह नाटक हमारी प्रजातान्त्रिक व्यवस्था की असलियत को बेनकाब करता है ।

श्रवण कुमार गोस्वामी के अनेग विचारोंतेजक एवं मर्मस्पर्शी नाटकों के बाद अब प्रस्तुत है, यह नाटक 'कल दिल्ली की बारे है' प्रस्तुत नाटक में नेता जी की राजनीति को प्रस्तुत किया गया है । नेता जी चाहे जैसे भी हों सत्तासीन रहना चाहते हैं । चाहे इसके लिए उनको कोई भी हथकण्डा क्यों न अपनाना पड़े, चाहे गुण्डों को बुलाकर भीड़ पर लाठियाँ क्यों ने चलवानी पड़े, चाहे किसी निर्दोष व्यक्ति के खिलाफ थाने में गलत रिपोर्ट क्यों ने दर्ज करवानी पड़े

। नाटक का आरम्भ चुनाव के प्रचार से होता है । प्रचारक नेता जी की अनेक खूबियों का बखान करते हुए नेता जी के चुनाव–चिन्ह का प्रचार करता है ।

अण्डा लाओ, अण्डा खाओ ।
अण्डा खाओ, सेहत बनाओ ।
सेहत बनाओ, देश बचाओ ।

देश बचाने के लिए अण्डा छाप को वोट दो । इसी बीच नेता जी को पता चलता है कि प्रोफेसर जर्नादन बाबू भी चुनाव में उनके खिलाफ खड़े हुए हैं । वह जर्नादन बाबू को हराने के लिए डाकू बज्जर सिंह का सहयोग लेता है । वह बज्जर सिंह को वक्त आने पर उसकी सहायता करने का वचन भी देता है । बज्जर सिंह डाकू है, जनता उससे डरती है, वह पूरे इलाके में घोषणा करवा देता है कि वोट केवल नेता जी को ही देने जाएँ । अगर वोट नेता जी को नहीं दी गई तो वह इलाके में तबाही मचा देगा । डाकू बज्जर सिंह जहाँ–जहाँ वोट पड़ रहे हैं, वहाँ जाकर सारी जाली वोट बनाकर नेता जी के चुनाव चिन्ह पर डाल देता है । डाकू बज्जर सिंह के आगे चुनाव अधिकारी भी कुछ नहीं बोल पाते, चुपचाप एक तरफ खड़े हुए देखते रहते हैं । अंत में नेता जी जीत जाते हैं । जर्नादन बाबू चुनाव में जाते हैं । वह सोचता है कि यह नेता जब मेरी मदद से चुनाव जीत जाते हैं, तो मैं स्वयं चुनाव क्यों न लड़ूँ और एक सम्मान का जीवन व्यतीत करूँ । यही सोचकर वह नेता के कपड़े डालकर नेता जी के पास जाता है तथा उसे टिकट देने के लिए कहता है । नेता जी टिकट अपनी बहू को देना चाहते हैं पर बज्जर सिंह के आगे उसकी एक नहीं चलती । उसे बज्जर सिंह को टिकट देना ही पड़ता है । टिकट मिलने के बाद बज्जर सिंह भाषण देने के लिए आता है, लोगों से अपने किए गये पापों की माफी माँगता है, वह जनता से जनता की सेवा करने का एक मौका भी माँगता है । जनता सोचती है कि नेता जी भी चोर–डाकू हैं, क्योंकि लगातार चुनाव जीतने के बाद भी नेता जी ने इलाके की तरक्की के लिए कुछ नहीं किया । बज्जर सिंह भी डाकू है, अतः दोनों में कोई खास अन्तर नहीं है । एक रात के अंधेरे में लोगों के यहाँ डाका डालता है, तो दूसरा सरेआम सफेद कपड़े पहनकर लोगों को लूटता है । अतः बज्जर सिंह को ही क्यों न मौका दिया जाये । बज्जर सिंह चुनाव जीत जाता है, जब उसके भी तेवर बदल जाते हैं । पत्रकार जब उससे बात करने के लिए आते हैं, तो वह कहता है कि वह पहले भी जनता की सेवा करता था और आगे भी जनता की सेवा करेगा । उसका अतीत पूछे जाने पर वह गुस्से से बिफर जाता है और कहता है कि मेरा नाम ठुकर ब्रजनाथ सिंह है, मैं किसी डाकू बज्जर सिंह को नहीं जानता । पत्रकार ब्रजनाथ सिंह से फिर प्रश्न करते हैं और कहते हैं कि आज आप विधानसभा के सदस्य बन गए हैं, भविष्य में आपका क्या इरादा है । बज्जर सिंह पूरे आत्मविश्वास के साथ कहता है कि –

आज विधानसभा हमारी है ।
कल दिल्ली की बारी है ।

'सोमा' संस्करण में कुल नौ नाटक हैं, जिनका संक्षिप्त वर्णन किया गया है ।

**सोमा**

प्रस्तुत नाटक 'फूल गुलाब के कांटे बबूल के' में रामधन नामक व्यक्ति की जीवन की कहानी को प्रभावशाली एवं सजीव ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है । रामधन एक सरकारी कार्यालय में चपरासी के पद पर कार्यरत है । रामधन का एक पुत्र है, जिसका नाम टुन्नु है । रामधन बाबा ने छोटे पर पर होते हुए भी अपने पुत्र को उँची तालीम करवायी, उसे अंग्रेजी स्कूल में दाखिला दिलवाया, उसी की बदौलत टुन्नू एक दिन आई.ए.एस. अफसर बन गया और अब वह दिल्ली में है । रामधन बाबा अब बूढ़े हो चले हैं, नौकरी से रिटायर्ड हो चुके हैं । सभी व्यक्ति रामधन बाबा की तारीफ करते हैं । एक दिन रामधन बाबा तथा उनकी पत्नी गुलब्बो अपने बेटे से मिलने के लिए दिल्ली जाते हैं, परन्तु अब टुन्नू बदल चुका है, वह माता–पिता को लेने के लिए स्टेशन नहीं आता और न ही किसी को भेजता है । थक–हार रामधन व गुलब्बो टुन्नू का बंगला ढूंढते हुए उसके बंगले पर पहुँच जाते हैं । बंगले पर दरबान उन दोनों को अन्दर नहीं जाने देता तथा उनका मजाक भी उड़ाता है । इतने में टुन्नू की गाड़ी बंगले के गेट पर पहुँचती है, टुन्नू अपने माता–पिता को देखे बिना बंगले के अंदर चला जाता है, वह दरबान को कहता है कि उन्हें (रामधन व गुलब्बो) बाहर पेड़ के नीचे बिठा दे । टुन्नू की पत्नी पमेला टुन्नू से झगड़ा करते हुए कहती है कि वह अपने माता'पिता को यहाँ से भगा दे । वह कहती है कि वह दोनों ग्रामीण हैं, देखने में भी अच्छे नहीं लगते । पमेला अपने पुत्र विक्की को भी रामधन व गुलब्बो से नहीं मिलने देती । जब रामधन उन दोनों का रूखा व्यवहार देखता है, तो वह गांव वापिस जाने लगता है । गुलब्बो एक बार अपने पोते को देखने के लिए अंदर जाती है, एक उपहार सोने की चेन विक्की को देने लगती है तो पमेला जोरदार थप्पड़ गुलब्बो के मुँह पर मार देती हे । रामधन गुलब्बो को चुप करवाता है । वह दोनों अपने गांव के लिए जैसे ही बंगले से बाहर निकलते हैं, तो रामधन को जमीन पर पड़ हुआ एक रूपये का नोट मिल जाता है, एकाएक वहाँ एक लाटरी का टिकट बेचने वाला आ जाता है, वह रामधन बाबा को लाटरी का टिकट लेने का आग्रह करता है । रामधन टिकट ले लेता है, उसका ईनाम (15 लाख) का निकल जाता है । जैसे ही पमेला को इस बात का पता चलता है तो वह माफी माँगने के लिए रामधन व गुलब्बो के पास आती है । रामधन टुन्नू को माफ नहीं करता और उनके लाख कहने पर भी उनके साथ दिल्ली नहीं जाता । पमेला गुस्से से लाल हो जाती है । पमेला का बेटा विक्की अपनी दादा–दादी के पास गांव में ही रूक जाता है, टुन्नू और पमेला को खाली हाथ दिल्ली लौटना पड़ता है, इस प्रकार पूरा नाटक मार्मिक है, जिसमें जीवन के रिश्तों की विडम्बना को अत्यन्त सजीव ढ़ंग से उभारा गया है ।

प्रस्तुत नाटक 'प्रतिशोध' में शहाबुद्धीन गोरी व पृथ्वीराज चौहान की कथा को प्रस्तुत किया गया । गोरी पृथ्वीराज चौहान को पकड़कर अपने साथ ले जाता है तथा पृथ्वीराज को अपने दरबार में बुलाकर उसे सजदा करने के लिए कहता है । पृथ्वीराज गोरी को सज़दा करने के लिए मना कर देता है, वह कहता है जिस व्यक्ति को मैंने युद्ध में सात बार पराजित किया है, उसे मैं कभी सज़दा नहीं करूँगा । पृथ्वीराज शोले की तरह दहकती नज़रों से गोरी को देखता है, गोरी अन्दर तक डर जाता है । वह अपने करिंदों से पृथ्वीराज की आँखें निकाल लाने के लिए कहता है । पृथ्वीराज की आँखें निकाल ली जाती हैं । इतने में पृथ्वीराज का राजकवि और मित्र चन्दरबरदाई पृथ्वीराज से मिलने के लिए आता है । जैसे ही उसे पता चलता है कि महाराज की आँखें उनके पास नहीं रही तो वह प्रतिशोध की ज्वाला में जल उठता है । वह गोरी को पृथ्वीराज की गुप्तकला के बारे में बताता है कि पृथ्वीराज एक ऐसी गुप्त कला को जानते हैं, जिसे संसार का दूसरा कोई व्यक्ति नहीं जानता गोरी उस गुप्त कला को देखने के लिए वह उत्सुक हो

जाता है, भरे दरबार में उस कला को देखने के लिए कहता है । पृथ्वीराज और चन्दरबरदाई एक गुप्त योजना बनाते हैं । चन्दरबरदाई कहता है कि मैं कविता पढ़कर आपको बताऊँगा कि गोरी कहां बैठा है, आप उस पर तीर चला देना । दोनों दरबार में प्रस्तुत होते हैं, दरबार में कला दिखाई जाती है । पृथ्वीराज चन्दरबरदाई के कहे अनुसार तीर चला देता है । गोरी अपने सिंहसान पर ही ढेर हो जाता है । अंत में पृथ्वीराज व चन्दरबरदाई एक–दूसरे के गले मिलते हैं । पृथ्वीराज स्वयं को तीर मार लेता है, चन्दरबरदाई कटार से अपने ऊपर ही वार कर लेता है, इस प्रकार दोनों वहीं ढेर हो जाते हैं । चन्दरबरदाई मरते–मरते कहता है कि उन्होंने गोरी से अपने अपमान का 'प्रतिशोध' ले लिया है । इस प्रकार दोनों के मरने के साथ ही नाटक का पटाक्षेप हो जाता है ।

**इन्तजार**

'इन्तजार' नाटक में कुमुद नामक नवयुवक की कथा को प्रस्तुत किया गया है, जो अपने परिवार के भरण–पोषण के चक्कर में रह गया है, घर का कोई भी व्यक्ति काम करना नहीं चाहता । हर कोई कुमुद पर निर्भर है । कुमुद के पिता हर वक्त शराब पीकर घर में पड़े रहते हैं, कोई काम नहीं करते । कुमुद का भाई नरेन्द्र भी कुछ नहीं करता, अवारा की तरह इधर–उधर घूमता रहता है । वह महिला महाविद्यालय के सामने बैठकर लड़कियों को देखता रहता है । कुमुद की दो बहनें हैं, जिनके पास मालती व कुसुम है, दोनों ही कामचोर है । वह भी घर को कोई भी काम करना वह नहीं चाहती । सारा काम उसकी माता जानकी को ही करना पड़ता है । दोनों आपस में हर समय लड़ती–झगड़ती रहती है, लड़कों को प्रेम–पत्र लिखती है । घर के सभी व्यक्तियों को हर समय शहर से कुमुद के आने का इंतजार रहता है, क्योंकि कुमुद आयेगा तो घर में रूपये आयेंगे ओर घर में राशन आयेगा । इस बार कुमुद दशहरे पर घर नहीं आ सका । कुमुद की माँ घर के द्वार पर खड़ी होकर कुमुद के भेजे गये मनीआर्डर नहीं आता । अगले दिन एक व्यक्ति कुमुद द्वारा भेजे गये रूपयों को लेकर आता है । कुमुद की माँ कुमुद के न आने का कारण उस व्यक्ति से पूछती है तथा उस व्यक्ति को अपने घर में ही रूकने के लिए बोलती है । वह व्यक्ति कुमुद की माँ को रूपये देकर चला जाता है । थोड़े दिनों के बाद कुमुद घर वापिस आता है तो कुमुद की माँ उसके दशहरे पर घर पर न आने का कारण पूछती है । वह कहता है कि मैंने तो रूपये भेज दिये थे तो आप मेरा इंतजार क्यों कर रहे थे । वह खाना खाकर बाहर निकल जाता है तो उसे अपने भाई–बहनों की बुरी आदतों के बारे में पता चलता है । रात को कुमुद शराब पीकर घर वापिस आता है । नशें में वह कहता है कि इस बार वह पटने जाकर विवाह कर लेगा तथा अपना घर बसायेगा । उसकी ऐसी बात सुनकर घर के सारे सदस्य परेशान हो जाते हैं कि अब घर का खच्र कैसे चलेगा । कुमुद के पिता बलराम जानकी से कुमुद को समझाने के लिए बोलते हैं, पर किसी में भी कुमुद के सामने बोलने की हिम्मत नहीं है । अगले दिन जब कुमुद पटना जाने लगता है तो उसकी माँ जानकी रोने लगती है । वह कहती है कि कुमुद बेटा हम अगले साल अच्छी लड़की देखकर तेरा विवाह जरूर कर देंगे, तू किसी गलत लड़की के चक्कर में न पड़ना । कुमुद अपनी माता से कहता है कि न जाने वो लोग कैसे होते होंगे जो अपनी औलाद के विवाह की बात सुनकर खुशी से नाच उठते होंगे । एक मेरा घर है, जहाँ पर सभी परेशान हो गये हैं । वह आगे कहता है कि माँ आप परेशान मत हो, क्योंकि मैं पहले कुसुम व मालती का विवाह करूँगा, फिर नरेन्द्र की शादी होगी, उसके बाद मैं खुद विवाह करूँगा । आप ही बताएं माँ अगर मैंने पहले विवाह कर लिया तो इस घर का खर्चा कैसे चलेगा । माँ, आप घबराना मत । मैं पहले की तरह मनीआर्डर भेजता रहूँगा । अब आपको ज्यादा इंतजार करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । यह बात कहकर कुमुद तेजी से बाहर निकल जाता है । जानकी चिन्ता में वहीं खड़ी रह जाती है, वह कहती है, "बेटा मैं पर्व–त्यौहार पर तुम्हारा इंतजार करूँगी ।"

**सहायकग्रन्थ**


1. एम.एल. गुप्ता व डी.डी. शर्मा, समाज शास्त्रीय अवधारणाएं, साहित्य–भवन, आगरा, संस्करण, 1972
2. डॉ. गोपालकृष्णअग्रवाल, मानवसमाज, लोकभारतीप्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 1973
3. डॉ. अच्युतानंदचिल्डियाज, प्राचीनभारतीय आर्थिकविचारक, विधि चिल्डियालबन्धु, डी.–59/9, वाराणसी, गान्धीनगर, आगरा, प्र. स. 1972
4. चन्द्राशेखरआधुनिकताबनामसमकालीनता, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, सं.–1972
5. जैनेन्द्रकुमार, समय औरमि, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्लीप्रथम सं. –1966
6. डॉ. चन्द्र, नाट्याचिन्तन, साहित्य रत्नालय, कानपुर, सं.–1987
7. जैनेन्द्रकुमार, समय, समस्याऔरसिद्धान्त, प्रर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं.–1971
8. डॉ. जयदेवतनेजा, समकालीनहिन्दीनाटकऔररंगमंच, तक्षशिलाप्रकाश, अंसारीरोड़, दरियागंज, नईदिल्ली, सं.–1978
9. डॉ. जयदेवतनेजा, समसामयिकहिन्दीनाटकोंमेंचरित्र–सृष्टि, समसामयिकप्रकाशन, दिल्ली, सं.–1988
10. डॉ. राधाकृष्ण, धर्मऔरसमाज, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, प्रथम सं.–1964
11. डॉ. रवीन्द्रनाथमुकर्जी, समाज शास्त्र के सिद्धान्त, सरस्वतीसदन, मुंसूरी, प्रथम सं.–1965
12. डॉ. रविन्द्रनाथमुकर्जी, भारतमेंसामाजिकपरिवर्तन, विवेक–प्रकाशन, दिल्ली, सं.–1987
13. रमेशकुन्तलमेघ, आधुनिकताबोध औरआधुनिकीकरण, अक्षरप्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं.–1969
14. डॉ. मान्धाताओक्षा, हिन्दीसमस्यानाटक, नेशनलपब्लिशिंगहाऊस, अंसारीरोड़ दिल्ली।
15. डॉ. बनबीरप्रसाद शर्मा, आधुनिकहिन्दीनाटक, अपंगप्रकाशन, दिल्ली, प्रथम सं.–2001
16. डॉ. दशरथओझा, नाट्य–समीक्षा, नेशनलपब्लिशिंगहाउस, दिल्ली, प्रथम सं.–1954
17. डॉ. दशरथओझा, आजकाहिन्दीनाटक, राजपाल एण्ड कम्पनी, कश्मीरीगेट, दिल्ली, प्रथम, सं.–1984
18. जवाहरलालनेहरू, राष्ट्रपिता, सस्ता–साहित्य प्रकाशन, दिल्ली।